यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना **जय महावीर** **जय गुरु राम**

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा–2018

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग – 11 आगम

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः–सभी प्रश्नों के उत्तर, दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान है तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर–334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

i.kkd%& 100

प्रश्न 1. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए– **12**

1. पाँच सौ धनुष की अवगाहना वाले केवली की सिद्ध अवस्था में कितनी अवगाहना होती है?
.....

2. जीव का लक्षण क्या है?
.....

3. आचार्य उपाध्याय की सेवा–शुश्रूषा करने वाले साधक की शिक्षा किस प्रकार बढ़ती है?
.....

4. आत्मा को आत्मा जानकर साधक किसमें मध्यस्थ रहता है?
.....

5. वायुकाय में गया हुआ जीव उत्कृष्ट कितने काल तक वायुकाय में रह सकता है?
.....

6. मनुष्य जीवन क्षणभंगुर है। भगवान ने इसकी क्षणभंगुरता की किससे तुलना की है?
.....

7. गुरु की आज्ञानुसार प्रवृत्ति करने वाले साधक किसका क्षय करते हैं?
.....

8. किन पाँच कारणों से शिक्षा की प्राप्ति नहीं होती है?

.....

9. दुमपत्तयं नामक अध्ययन में भगवान ने गौतम स्वामी से कितनी बार ''समय मात्र का भी प्रमाद मत करो'' ऐसा कहा है?

.....

10. जो अपने मूल स्वरूप से नाश को प्राप्त नहीं होता है वह क्या है?

.....

11. ऐशान देवलोक के देवों की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है?

.....

12. सिद्ध किस स्थान में प्रतिष्ठित है?

.....

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए **16**

1. तत्त्वो तिभागहीणं ..... भणिया।
2. तत्त्वार्थ ..... सम्यग्दर्शनम्।
3. सचित्तशीतसंवृत्ताः ..... मिश्राश्चैकशास्तद्योनयः।
4. वाया दुरूत्ताणि दुरुद्धराणि ..... महब्भयाणि।
5. नृस्थिती ..... त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते।
6. किंचि ..... ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं।
7. तेसिं गुरुणं ....., सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं।
8. मत्तिज्जमाणो ..... सुयं लद्धूण मज्जइ।
9. नीयं सेज्जं गइ ठाणं, नीयं च ..... य।
10. तदादीनि ..... युगपदेकस्याऽऽचतुर्म्यः।
11. बुद्धे परिनिव्वुडे चरे, ... नगरे व संजए।
12. ..... दक्षिणर्धाधिपतीनां पल्योपममध्यर्धम्।
13. ..... नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया।
14. पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धु .....।
15. शुभं विशुद्धमव्याघाति ..... चतुर्दशपूर्व धरस्यैव।
16. मतिःस्मृतिः ..... चिंताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्।

प्रश्न 3. लाईन पूरी कीजिए- **10**

1. सिद्धस्स ..... माएज्जा।
2. विशुद्धि ..... पर्याययोः।
3. तहेव ..... गुज्झगा।
4. बुद्धे ..... पमायए।
5. जहा ..... विरायइ।
6. ..... मुणी पंचरए ..... पुज्जो।
7. ..... परा स्थितिः।
8. धम्मो त्ति ..... पुज्जो।
9. अवउज्झिय ..... चेव .....।
10. .....परिणामः ..... कालस्य।

प्रश्न 4. निम्न सूत्रों के अर्थ लिखिए- **18**

1. जहा से संयमुरमणे उदही अक्खओदए। नाणारयणपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए।

.....

.....

2. राइणिएसुविणयं पउंजे, डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।

नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई, ओवायवं वक्ककरे, स पुज्जो।

.....

3. असङ्ख्येयभागादिषु जीवानम्। प्रदेशसंहारविसर्गाभ्यां प्रदीपवत्।

.....

4. जं देवाणं सोक्खं, सव्वद्धा पिंडियं अणंतगुणं। ण य पावइ मुत्तिसुहं, णंवाहिं वग्गवग्गूहिं।

.....

.....

5. द्विविधोऽवधिः। तत्र भवप्रत्ययो नारकदेवानाम्। यथोक्तनिमित्तः षड्विकल्पः शेषणाम्।

.....

6. एवं धम्मस्स विणओ मूलं, परमो से भोक्खो। जेण कित्तिं सुयं सिग्धं निस्सेसं चाभिगच्छइ।

.....

.....

7. बुद्धस्स निसम्भ भासियं, सुकहियमट्ठपओवसोहियं। रागं दोसं च छिन्दिया सिद्धिगइं गए गोयमे।

.....

.....

8. जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडी सढे। वुब्भई से अविणीयप्पा, कट्ठं सोयगयं जहा।

.....

.....

9. सदसतोरविशेषाद् यट्टच्छोपलब्धेरून्मत्तवत्।

.....

.....

प्रश्न 5. निम्न अर्थो की मूल गाथाएँ लिखिए- **20**

1. समस्त प्राणियों को चिरकाल तक भी मनुष्य जन्म पाना दुर्लभ है। (क्योंकि मनुष्यगतिघातक) कर्मो का विपाक अत्यन्त दृढ़ होता है। अतः गौतम क्षण मात्र का भी प्रमाद मत करो।

.....

.....

.....

.....

2. जैसे नक्षत्रों के परिवार से परिवृत नक्षत्रों का अधिपति चन्द्रमा पूर्णमासी को परिपूर्ण होता है उसी प्रकार बहुश्रुत (जिज्ञासु साधकों से परिवृत, साधुओं का अधिपति एवं ज्ञानादि सकल कलाओं से परिपूर्ण) होता है।

.....

.....

.....

.....

3. जो मुनि पीठ पीछे कदापि किसी का अवर्णवाद नहीं बोलता तथा प्रत्यक्ष में विरोधी भाषा नहीं बोलता, वह पूज्य होता है।

.....

.....

.....

4. अविनीत (व्यक्ति) को विपत्ति और विनीत को सम्पत्ति (प्राप्त) होती है, जिसको ये दोनों प्रकार से (विपत्ति और सम्पत्ति) ज्ञान है, वही (इस कल्याणकारिणी) शिक्षा को प्राप्त होता है।

.....

.....

.....

5. धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल ये चार द्रव्य अजीवकाय है अर्थात् अचेतन और बहुप्रदेशी पदार्थ है। पूर्वोक्त चार अजीवकाय और जीव, ये पाँचों द्रव्य कहलाते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

6. जहाँ एक सिद्ध है, वहाँ भव-क्षय-जन्म-मरण रूप सांसारिक आवागमन के नष्ट हो जाने से मुक्त हुए अनंत सिद्ध है, जो परस्पर अवगाढ़-एक दूसरे में मिले हुए हैं। वे सब लोकान्त का -लोकाग्र भाग का संस्पर्श किये हुए हैं।

.....

.....

.....

.....

7. विग्रहगति में कार्मण योग ही होता है। गति, अनुश्रेणि अर्थात् आकाश प्रदेशों की सरलरेखा के अनुसार होती है। मोक्ष में जाते हुए जीव की गति विग्रहरहित होती है। संसारी आत्मा की गति अविग्रह और सविग्रह दोनों प्रकार की होती है। विग्रह-मोड़ चार से पहले अर्थात् तीन तक हो सकते हैं।

.....

.....

.....

8. इसी प्रकार जो औपबाह्य हाथी और घोड़े अविनीत होते हैं वे (सेवाकाल) दु:ख भोगते हुए तथा भार-वहन आदि निम्न कार्यों में जुटाये हुए देखे जाते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

9. मनुष्य (धनादि के लाभ की) आशा से लोहे के काँटे को उत्साह पूर्वक सहन कर सकता है किन्तु जो (किसी भौतिक लाभ की) आशा के बिना कानों में प्रविष्ट होने वाले तीक्ष्ण वचनमय काँटो को सहन कर लेता है, वही पूज्य होता है।

.....

.....

.....

.....

.....

10. दुर्बल भारवाहक जैसे विषय मार्ग पर चढ़ जाता है तो बाद में पश्चाताप करता है उसकी तरह, गौतम! तू विषय मार्ग पर मत जाना, अन्यथा तुझे भी बाद में पछताना पड़ेगा। अतः समय मात्र का भी प्रमाद मत कर।

.....

.....

.....

प्रश्न 6. सही या गलत- **10**

1. सनत्कुमार देवलोक के देवों की उ. स्थिति सात सागरोपम की है। ( )
2. एक जीव के प्रदेश असंख्यात है। ( )
3. अनंत केवलदर्शन द्वारा सभी पदार्थो के गुणों एवं पर्यायों को जानते हैं। ( )
4. तेजस् और कार्मण शरीर प्रतिघात-बाधा से रहित है। ( )
5. वाणी से निकले हुए दुर्वचनरूपी काँटे सरलता से निकाले जा सकते है। ( )
6. द्वीन्द्रियकाय में गया हुआ जीव अधिक से अधिक असंख्यात काल तक रहता है। ( )
7. विद्यावान होते हुए भी अंहकारी है वह अबहुश्रुत है। ( )
8. मनुष्य जन्म पाकर आर्यत्व का पाना दुर्लभ है। ( )
9. मनुष्य गुणों से असाधु और दुर्गुणों से साधु होना है। ( )
10. बंध के समय सम और अधिक गुण तथा सम और हीन गुण को परिणमन कहते है। ( )

प्रश्न 7. नीचे दी गयी लाइनों को सही करें- **10**

1. जे य चंडे मिए थद्धे कुप्पई नियडी सढे। .....
2. एक्का य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयक्मिुक्का। .....
3. जम्बूद्वीपलवणादयः अशुभनामानो द्वीपसमुद्राः। .....
4. तेण तेण उवाएणं तं तं सपडिलेहित्ताणं। .....

5. राइणिएसु विणयं विसुद्धं, डहरा वि य जे परियायजेट्ठा। .....

6. इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहुपच्चावायए। .....

7. पियंकरे पियंवाई, से निहियं लद्धु मरिहइ। .....

8. जहा से सयंभुरमणे, मंदरे अक्खओदए। .....

9. जेण अबंधं वहं धोरं परियावं च दारूणं। .....

प्रश्न 8. साधक सुविनीत कितने कारणों से कहलाता है? कारण लिखें? **4**

.....

.....

.....

.....

.....

.....